प्रसंगशः

आलोक मेहता

# 'असली धन' की अर्चना

दीपावली से पहले 'असली धन' पाने और उसे सुरक्षित रखने का उत्सव आधुनिक धन्वंतरि समाजसेवी डॉ. के.के. अग्रवाल ने आयोजित किया। महानगर दिल्ली में 19 वर्षों से लगातार सैकड़ों लोगों को स्वस्थ और शतायु रहने के अमृत रूपी ज्ञान मुफ्त बांटना उपमुख देश-दुनिया के लिए अनूठी मिसाल है। विश्व रिकॉर्ड बुक में नाम दर्ज होने से अधिक महत्वपूर्ण है–'धनतेरस' पर भगवान धन्वंतरि की पूजा-अर्चना करने वाले लोगों को अपने साथ परिजन, पड़ोसी, परिचित-अपरिचित की जीवनरक्षा के लिए संकल्प लेने की राह दिखाना। 'परफेक्ट हेल्थ मेला' बैनर से होने वाले इस आयोजन में आयुर्वेद, एलोपैथी, होम्योपैथी, नेचरोपैथी चिकित्सा पद्धतियों के जाने-माने डॉक्टर, विशेषज्ञ पहुंचकर जन-सामान्य को स्वस्थ रहने के तरीकों, बीमारियों से बचने और कष्ट होने पर सही इलाज का ज्ञान देते हैं। इसीलिए हम इसे धन्वंतरि अभियान का आधुनिक रूप मानते हैं। भारतीय प्राचीन ग्रंथों की मान्यता के अनुसार देवों और असुरों द्वारा किए गए समुद्र-मंथन के दौरान भगवान विष्णु धन्वंतरि के अवतार में जड़ी-बूटियों का कलश लेकर अवतरित हुए थे। इस दृष्टि से धन्वंतरि को भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद का जन्मदाता माना जाता है और दीपावली से पहले धनतेरस के दिन उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। वेद-पुराण में औषधियों के ज्ञाता और श्रेष्ठ चिकित्सक को यदि देवता रूप अवतार बताया गया तो गलत क्या है? भारत ही नहीं विश्व पर से इंसान को स्वस्थ रखने और चिकित्सा से उसे अधिकाधिक शिक्षित रखने जैसी सेवा करने वाले की महत्ता स्वीकारी जाती है। यह बात अलग है कि सामाजिक-राजनीतिक गड़बड़ियों के कारण आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में भी गड़बड़ी करने वाले पैदा हो गए हैं। हजारों करोड़ का साम्राज्य बनाने वाले बाबा रामदेव ने योग प्रचार तो ठीक किया लेकिन आधे-अधूरे ज्ञान से गलत फॉर्मूलों के पत्ते पढ़ाकर भ्रम भी पैदा किए। भारत के जाने-माने चिकित्सक चाहे वेहन हों या डॉ. अनूप मिश्र अथवा डॉ. के.के. अग्रवाल या डॉ. पी.के. दवे अथवा आयुर्वेद के प्रसिद्ध वैद्य त्रिगुणसेठी या होम्योपैथी के समर्पित युवा विशेषज्ञ डॉ. ए.के. अरुण–सभी यह मानते हैं कि अंधविश्वास की तरह गलत दावों से लोगों को भ्रमित करने के बजाय सही बात और उपयुक्त दवाई दी जानी चाहिए। मोटी कमाई और मुनाफे के लालच में अनावश्यक दवाई देना, जान के खतरे का भय दिखाकर गलत सलाह देना किसी बड़े अपराध से कम नहीं है।

इसमें कोई शक नहीं कि भारत ही नहीं, दुनिया भर में आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की दवाई, प्राकृतिक चिकित्सा की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है लेकिन अच्छी जड़ी-बूटियों और उनका ज्ञान रखने वालों की कमी भारत में हो रही है। इसी तरह सरकार के सारे दावों के बावजूद आयुर्वेद की अच्छी शिक्षा-दीक्षा, बड़ी संख्या में आयुर्वेद अस्पतालों की व्यवस्था पर केंद्र या राज्य सरकारों ने समुचित प्रयास नहीं किए हैं।

एक तरफ आयुर्वेदिक दवाइयों की खपत करीब दस हजार करोड़ रुपए तक पहुंच गई है और औषध निर्माता यूनिट भी नौ हजार से अधिक हैं लेकिन इन दवाइयों की शुद्धता की पड़ताल के लिए अच्छी मशीनरी विकसित नहीं की गई है। इससे अंतर्राष्ट्रीय जगत में आयुर्वेदिक दवाइयों के स्तर को सही ढंग से मान्यता तक नहीं मिल पा रही है। इसी तरह बाबा रामदेव अथवा ऐसे पचासों लोगों द्वारा कंपनियों या संस्थानों के नाम पर बनाई जाने वाली दवाइयों की शुद्धता की जांच-पड़ताल विवाद सार्वजनिक होने के बाद की जाती है। यही नहीं, समय पर उनसे टैक्स नहीं वसूला जाता और बाद में वसूली भी कानूनी दांव-पेंच में फंसी रहने के कारण वर्षों बाद हो पाती है। चिकित्सा के क्षेत्र में गलत परामर्श देने वालों पर धोखाधड़ी के मामले चलाकर दंड देने की व्यवस्था तक नहीं है। कैंसर, हृदय रोग, किडनी या लीवर की बीमारियों के शर्तिया इलाज के नाम पर कथित चिकित्सक या बाबा लाखों लोगों को भ्रमित करते रहते हैं। ऐसे दावों के प्रचार-प्रसार पर भी कोई अंकुश नहीं है। आयुर्वेदिक दवाइयों के नाम पर एलोपैथी दवाई का पाउडर मिलाकर देने पर आज तक किसी को सजा नहीं मिली? धर्म और धन्वंतरि के नाम पर धंधा करने वाले ठगों के विरुद्ध संसद में कभी कोई आवाज क्यों नहीं उठती?

आयुर्वेद की महत्ता को बड़े स्तर पर मान्यता दिलाने के लिए दिसंबर में भोपाल में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हो रहा है। यह अच्छी पहल है लेकिन इसमें बाजार की मांग और किसी खास समूह के हित रक्षण के रूप में नहीं, सही अर्थों में आयुर्वेद चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार-प्रसार के साथ कमियों एवं गड़बड़ियों की समीक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने आयुर्वेद प्रोत्साहन के साथ बड़े पैमाने पर जड़ी-बूटियों के उत्पादन के लिए विभिन्न क्षेत्रों में वन विकसित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने स्वयं कुछ पार्क विकसित किए। लेकिन यह तो प्रतीकात्मक है। केंद्र सरकार में तो आलम यह है कि ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया और आयुष रेग्युलेटरी अथॉरिटी के बीच ही टकराव बना हुआ है। पारंपरिक दवाइयों की मॉनिटरिंग अधिक महंगी पड़ रही है। मतलब सरकार उस पर भी अधिक खर्च नहीं करना चाहती। जिस तरह सौर ऊर्जा के लिए पिछले 20 वर्षों में ध्यान नहीं दिया गया और अब धीमी रफ्तार से अगले 20 वर्षों की योजना बनाई गई, उसी तरह आयुर्वेद चिकित्सा व्यवस्था पर न्यूनतम खर्च किया जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की मोह-माया, दुनिया भर में प्रतिबंधित कई दवाइयों की भारत में बिक्री की छूट से होने वाली करोड़ों की कमाई और अवैध कमीशन का फेर संपूर्ण भारतीय समाज के लिए घातक होता जा रहा है। लेकिन सत्ता व्यवस्था और निहित स्वार्थ वाले कारोबारियों के कारण मादक पदार्थों और भारी प्रदूषण फैलाने वाले प्राणघातक पटाखों की तरह गलत दवाइयों और फर्जी चिकित्सकों-बाबाओं का धंधा जारी है। रविवार 11 नवंबर को धन्वंतरि या विष्णु-लक्ष्मी के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर पूजा-अर्चना करने वालों को इस बात का संकल्प लेना चाहिए कि वे भारतीय चिकित्सा के नाम पर ठगी को रोकने एवं समाज में स्वास्थ्य रक्षा के अभियान को बढ़ाने के लिए हर संभव योगदान देंगे।

alokmehta@nationaldunia.com